पुणना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

व्याकरण :-

-वर्णों के जोड़ से शब्द बनते है -सही शब्दों के जोड़ से वाक्य बन्ता है|

वाक्य के अंग (Vakya ke Ang)

(1) उद्देश्य

(2) विधेय

(1) उद्देश्य →

जैसे → **वैशाली** कपड़े धो रही थी |

दमयंती ने खाना बनाया |

→ वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं |

→ उद्देश्य के अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार आता है |

(2) **विधेय** →

जैसे → रोहन **झगड़ रहा था** |

राधा **सितार बजा रही है** |

वाक्य के भेद)Vakya ke bhed)

(1) अर्थ के आधार पर (Arth ke aadhar par vakya ke bhed)

(2) रचना के आधार पर (Rachna ke aadhar par vakya ke bhed)

(1) विधानवाचक वाक्य

(2) निषेधवाचक वाक्य

(3) विस्मयवाचक वाक्य

(4) संदेहवाचक वाक्य

(5) आज्ञावाचक वाक्य

(6) संकेतवाचक वाक्य

(7) इच्छावाचक वाक्य

(8) प्रश्नवाचक वाक्य

(1) विधानवाचक वाक्य→

→ जिस वाक्य में किसी बात या कार्य के होने या करने का सामान्य कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते है |

जैसे → वेदांत विद्यालय जा रहा है |

→ बलवीर ने भाषण दिया |

(2) **निषेधवाचक वाक्य→**

जिस वाक्य में क्रिया के करने या होने का निषेध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → मैं बाजार **नहीं** जाऊँगा |

→ मोहन घूमने **नहीं** जा रहा |

(3) **आज्ञावाचक वाक्य→**

जिस वाक्य से आज्ञा, अनुमति, विनय या अनुरोध का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए |

तुम अंदर जाकर पढ़ाई करो

(4) **प्रश्नवाचक वाक्य→**

जिन वाक्यों द्वारा प्रश्न करने का भाव प्रकट होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → राहुल को किसने डाँट दिया **?**

आपको किससे मिलना है **?**

(5) **इच्छावाचक वाक्य→**

जिस वाक्यों से इच्छा, आशीर्वाद, कामना, शुभकामना आदि का भाव प्रकट होता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) आपकी यात्रा मंगलमय हो |

(2) ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दे |

(6) **संदेहवाचक वाक्य→**

ऐसे वाक्य जिनसे कार्य के होने या न होने के प्रति संदेह या संभावना प्रकट होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) शायद कल वर्षा हो जाए |

(2) लगता है आज बारिश होगी |

(7) **संकेतवाचक वाक्य→**

जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) पानी न बरसता, तो धान सूख जाता |

(2) यदि पेड़ लगाएँगे, तो वायु शुद्ध होगी |

(8) विस्मयवाचक वाक्य→

जिस वाक्य से हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, आदि भावों का बोध होता है, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं |**जैसे** → (1) **बाप रे !** इतना मोटा चूहा |

(2) **वाह !** कितनी सुंदर फुलवारी है |

2.वाक्य के प्रकार:-

1. **सरल वाक्य**
2. **संयुक्त वाक्य**
3. **मिश्रित वाक्य**
4. (1) सरल वाक्य→

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं |

जैसे → राम ने रावण को मारा

उद्देश्य = राम ने

विधेय = रावण को मारा |

अमित खाना खा रहा है |

उद्देश्य = अमित

विधेय = खाना खा रहा है |

(2) संयुक्त वाक्य→

जिस वाक्य में दो-या-दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजक या समुच्चयबोधक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं |

उदाहरण

(1) हमने फिल्म का टिकट खरीदा **और** सिनेमा हॉल चले गए |

(2) पिताजी बाजार गए **और** हमारे लिए मिठाई लाए |

(3) **मिश्रित वाक्य**→

जिस वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य इस प्रकार जुड़े हो कि उनमें एक प्रधान उपवाक्य तथा अन्य आश्रित उपवाक्य हों | उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं |

जैसे → वेदांत ने कहाँ कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

प्रधान उपवाक्य = वेदांत ने कहाँ

आश्रित उपवाक्य = कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

(2) वे सफल होते हैं जो परिश्रम करते है |

प्रधान उपवाक्य = वे सफल होते हैं

आश्रित उपवाक्य = जो परिश्रम करते है |

रचना के आधार पर वाक्यों में परिवर्तन

सरल वाक्य

चाय या कॉफी में से कोई पी लेंगे |

माँ ने गोलू को डाँटकर सुलाया |

संयुक्त वाक्य

चाय पी लेंगे या कॉफी पी लेंगे

माँ ने गोलू को डाँटा और सुला दिया

सरल वाक्य

लापरवाह मजदूर छत से गिर गया |

ईमानदार व्यक्ति का सभी आदर करते हैं |

मिश्र वाक्य

जो मज़दूर लापरवाह था, वह छत से गिर गया |

जो व्यक्ति ईमानदार होता है, सभी उसका आदर करते हैं |

संयुक्त वाक्य

शालू आई और पढ़ने लगी |

घबराओ मत और कविता सुनाओ |

सरल वाक्य

शालू आकर पढ़ने लगी |

बिना घबराए कविता सुनाओ |

(संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य)

संयुक्त वाक्य

घंटी बज गई और बच्चे कक्षा में जाने लगे |

राधा आई तो रेखा चली गई |

मिश्र वाक्य

जब घंटी बजी तब बच्चे कक्षा में जाने लगे |

जब राधा आई तब रेखा चली गई |

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य

(1) कक्षा में अध्यापक आते ही सभी शांत हो गए | (सरल वाक्य)

कक्षा में अध्यापक आए और सभी शांत हो गए | (संयुक्त वाक्य)

जैसे ही कक्षा में अध्यापक आए वैसे ही सब शांत हो गए| (मिश्र वाक्य)

(2) माँ के आते ही दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (सरल वाक्य)

माँ आई और दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (संयुक्त वाक्य)

ज्यों ही माँ आई दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (मिश्र वाक्य)

*-सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन:-

(1)सरल वाक्य- अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।

संयुक्त वाक्य- वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।

(2)सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

(3)सरल वाक्य- गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।

संयुक्त वाक्य- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

(4)सरल वाक्य- पैसा साध्य न होकर साधन है।

संयुक्त वाक्य- पैसा साध्य नहीं है, किन्तु साधन है।

(5)सरल वाक्य- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदर-सत्कार होता है।

संयुक्त वाक्य- उसमें गुण थे, इसलिए उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था।

(6)सरल वाक्य- दोनों में से कोई काम पूरा नहीं हुआ।

संयुक्त वाक्य- न एक काम पूरा हुआ न दूसरा।

(7) सरल वाक्य- पंगु होने के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

संयुक्त वाक्य- वह पंगु है इसलिए घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

(8) सरल वाक्य- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

संयुक्त वाक्य- परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।

(9) सरल वाक्य- रमेश दण्ड के भय से झूठ बोलता रहा।

संयुक्त वाक्य- रमेश को दण्ड का भय था, इसलिए वह झूठ बोलता रहा।

(10) सरल वाक्य- वह खाना खाकर सो गया।

संयुक्त वाक्य- उसने खाना खाया और सो गया।

(11) सरल वाक्य- उसने गलत काम करके अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य- उसने गलत काम किया और अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

(2)संयुक्त वाक्य- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे।

सरल वाक्य- जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे।

(3)संयुक्त वाक्य- वह धनी है पर लोग ऐसा नहीं समझते।

सरल वाक्य- लोग उसे धनी नहीं समझते।

(4)संयुक्त वाक्य- वह अमीर है फिर भी सुखी नहीं है।
सरल वाक्य- वह अमीर होने पर भी सुखी नहीं है।

(5)संयुक्त वाक्य- बाँस और बाँसुरी दोनों नहीं रहेंगे।
सरल वाक्य- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(6)संयुक्त वाक्य- राजकुमार ने भाई को मार डाला और स्वयं राजा बन गया।
सरल वाक्य- भाई को मारकर राजकुमार राजा बन गया।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1)सरल वाक्य- उसने अपने मित्र का पुस्तकालय खरीदा।
मिश्र वाक्य- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मित्र का था।

(2)सरल वाक्य- अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।
मिश्र वाक्य- जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते हैं।

(3)सरल वाक्य- लोकप्रिय कवि का सम्मान सभी करते हैं।
मिश्र वाक्य- जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

(4)सरल वाक्य- लड़के ने अपना दोष मान लिया।
मिश्र वाक्य- लड़के ने माना कि दोष उसका है।

(5)सरल वाक्य- राम मुझसे घर आने को कहता है।
मिश्र वाक्य- राम मुझसे कहता है कि मेरे घर आओ।

(6)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ खेलूँ।

(7)सरल वाक्य- आप अपनी समस्या बताएँ।
मिश्र वाक्य- आप बताएँ कि आपकी समस्या क्या है ?

(8)सरल वाक्य- मुझे पुरस्कार मिलने की आशा है।
मिश्र वाक्य- आशा है कि मुझे पुरस्कार मिलेगा।

(9)सरल वाक्य- महेश सेना में भर्ती होने योग्य नहीं है।

मिश्र वाक्य- महेश इस योग्य नहीं है कि सेना में भर्ती हो सके।

(10)सरल वाक्य- राम के आने पर मोहन जाएगा।

मिश्र वाक्य- जब राम जाएगा तब मोहन आएगा।

(11)सरल वाक्य- मेरे बैठने की जगह कहाँ है ?

मिश्र वाक्य- वह जगह कहाँ है जहाँ मैं बैठूँ ?

(12)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।

मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ व्यापार करूँ।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।

सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष घोषित किया।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे बताओ कि तुम्हारा जन्म कब और कहाँ हुआ था।

सरल वाक्य- तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।

(3)मिश्र वाक्य- जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

सरल वाक्य- परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।

(4)मिश्र वाक्य- ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही घण्टा बजा।

सरल वाक्य- मेरे वहाँ पहुँचते ही घण्टा बजा।

(5)मिश्र वाक्य- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा।

सरल वाक्य- पानी न बरसने पर सूखा पड़ जाएगा।

(6)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।

सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष बताया।

(7)मिश्र वाक्य- यह निश्चित नहीं है कि वह कब आएगा?

सरल वाक्य- उसके आने का समय निश्चित नहीं है।

(8)मिश्र वाक्य- जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा।

सरल वाक्य- तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा।

(9)मिश्र वाक्य- जहाँ राम रहता है वहीं श्याम भी रहता है।

सरल वाक्य- राम और श्याम साथ ही रहते हैं।

(10)मिश्र वाक्य- आशा है कि वह साफ बच जाएगा।

सरल वाक्य- उसके साफ बच जाने की आशा है।

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1) संयुक्त वाक्य- सूर्य निकला और कमल खिल गए।

मिश्र वाक्य- जब सूर्य निकला, तो कमल खिल गए।

(2) संयुक्त वाक्य- छुट्टी की घंटी बजी और सब छात्र भाग गए।

मिश्र वाक्य- जब छुट्टी की घंटी बजी, तब सब छात्र भाग गए।

(3)संयुक्त वाक्य- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा।

मिश्र वाक्य- यदि काम पूरा नहीं करोगे तो जुर्माना होगा।

(4)संयुक्त वाक्य- इस समय सर्दी है इसलिए कोट पहन लो।

मिश्र वाक्य- क्योंकि इस समय सर्दी है, इसलिए कोट पहन लो।

(5)संयुक्त वाक्य- वह मरणासन्न था, इसलिए मैंने उसे क्षमा कर दिया।

मिश्र वाक्य- मैंने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह मरणासन्न था।

(6)संयुक्त वाक्य- वक्त निकल जाता है पर बात याद रहती है।

मिश्र वाक्य- भले ही वक्त निकल जाता है, फिर भी बात याद रहती है।

(7)संयुक्त वाक्य- जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो बस चली जाएगी।

मिश्र वाक्य- यदि जल्दी तैयार नहीं होओगे तो बस चली जाएगी।

(8)संयुक्त वाक्य- इसकी तलाशी लो और घड़ी मिल जाएगी।

मिश्र वाक्य- यदि इसकी तलाशी लोगे तो घड़ी मिल जाएगी।

(9)संयुक्त वाक्य- सुरेश या तो स्वयं आएगा या तार भेजेगा।

मिश्र वाक्य- यदि सुरेश स्वयं न आया तो तार भेजेगा।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- वह उस स्कूल में पढ़ा जो उसके गाँव के निकट था।

संयुक्त वाक्य- वह स्कूल में पढ़ा और वह स्कूल उसके गाँव के निकट था।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे वह पुस्तक मिल गई है जो खो गई थी।

संयुक्त वाक्य- वह पुस्तक खो गई थी परन्तु मुझे मिल गई है।

(3)मिश्र वाक्य- जैसे ही उसे तार मिला वह घर से चल पड़ा।

संयुक्त वाक्य- उसे तार मिला और वह तुरन्त घर से चल पड़ा।

(4)मिश्र वाक्य- काम समाप्त हो जाए तो जा सकते हो।

संयुक्त वाक्य- काम समाप्त करो और जाओ।

(5)मिश्र वाक्य- मुझे विश्वास है कि दोष तुम्हारा है।

संयुक्त वाक्य- दोष तुम्हारा है और इसका मुझे विश्वास है।

(6)मिश्र वाक्य- आश्चर्य है कि वह हार गया।

संयुक्त वाक्य- वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है।

(7)मिश्र वाक्य- जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

संयुक्त वाक्य- जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य में परिवर्तन

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हम पढ़ चुके हैं। उनका भी रूपान्तरण हो सकता है। एक
वाक्य का उदाहरण देखिए-

विधानवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।
निषेधवाचक- अनुपमा पुस्तक नहीं पढ़ेगी।
प्रश्नवाचक- क्या अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी ?
विस्मयवाचक- अरे! अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।
आज्ञावाचक- अनुपमा, पुस्तक पढ़ो।
इच्छावाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ती होगी।
संकेतवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़े तो ......

विधिवाचक से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)विधिवाचक वाक्य- वह मुझसे बड़ा है।
निषेधवाचक- मैं उससे बड़ा नहीं हूँ।

(2)विधिवाचक वाक्य- अपने देश के लिए हरएक भारतीय अपनी जान देगा।
निषेधवाचक वाक्य- अपने देश के लिए कौन भारतीय अपनी जान न देगा ?

विधानवाचक वाक्य से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) विधानवाचक वाक्य- यह प्रस्ताव सभी को मान्य है।
निषेधवाचक- इस प्रस्ताव के विरोधाभास में कोई नहीं है।

(2) विधानवाचक वाक्य- तुम असफल हो जाओगे।
निषेधवाचक- तुम सफल नहीं हो पाओगे।

(3) विधानवाचक वाक्य- शेरशाह सूरी एक बहादुर बादशाह था।
निषेधवाचक- शेरशाह सूरी से बहादुर कोई बादशाह नहीं था।

(4) **विधानवाचक वाक्य-** रमेश सुरेश से बड़ा है।
निषेधवाचक- रमेश सुरेश से छोटा नहीं है।

(5) **विधानवाचक वाक्य-** शेर गुफा के अन्दर रहता है।
निषेधवाचक- शेर गुफा के बाहर नहीं रहता है।

(6) **विधानवाचक वाक्य-** मुझे सन्देह हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।
निषेधवाचक- मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।

(7) **विधानवाचक वाक्य-** मुगल शासकों में अकबर श्रेष्ठा था।
निषेधवाचक- मुगल शासकों में अकबर से बढ़कर कोई नहीं था।

निश्चयवाचक वाक्य से प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) **निश्चयवाचक-** आपका भाई यहाँ नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- आपका भाई कहाँ है ?

(2) **निश्चयवाचक-** किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।
प्रश्नवाचक- किस पर भरोसा किया जाए ?

(3) **निश्चयवाचक-** गाँधीजी का नाम सबने सुन रखा है।
प्रश्नवाचक- गाँधीजी का नाम किसने नहीं सुना?

(4) **निश्चयवाचक-** तुम्हारी पुस्तक मेरे पास नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास कहाँ है?

(5) **निश्चयवाचक-** तुम किसी न किसी तरह उत्तीर्ण हो गए।
प्रश्नवाचक- तुम कैसे उत्तीर्ण हो गए?

(6) **निश्चयवाचक-** अब तुम बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो।
प्रश्नवाचक- क्या तुम अब बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो?

(7) **निश्चयवाचक-** यह एक अनुकरणीय उदाहरण है।
प्रश्नवाचक- क्या यह अनुकरणीय उदाहरण नहीं हैं?

विस्मयादिबोधक वाक्य से विधानवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)**विस्मयादिबोधक-** वाह! कितना सुन्दर नगर है!
विधानवाचक वाक्य- बहुत ही सुन्दर नगर है!

(2) **विस्मयादिबोधक-** काश! मैं जवान होता।
विधानवाचक वाक्य- मैं चाहता हूँ कि मैं जवान होता।

(3) **विस्मयादिबोधक-** अरे! तुम फेल हो गए।
विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे फेल होने से आश्चर्य हो रहा है।

(4) **विस्मयादिबोधक-** ओ हो! तुम खूब आए।
विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे आगमन से अपार ख़ुशी है।

(5) **विस्मयादिबोधक-** कितना क्रूर!
विधानवाचक वाक्य- वह अत्यन्त क्रूर है।

(6) **विस्मयादिबोधक-** क्या! मैं भूल कर रहा हूँ!
विधानवाचक वाक्य- मैं तो भूल नहीं कर रहा।

(7) **विस्मयादिबोधक-** हाँ हाँ! सब ठीक है।
विधानवाचक वाक्य- मैं अपनी बात का अनुमोदन करता हूँ।

‘शब्द , पद, पदबंध‘

शब्द:-

शब्द दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बने उस समूह को कहते हैं जिसका कोई निर्दिष्ट अर्थ हो, जैसे - पानी

यह शब्द चार वर्णों के मेल से बना है- प्+आ+न्+ई = पानी

पानी शब्द सुनते या देखते ही हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे तरल द्रव्य का चित्र उभरता है जिसे पीकर हम अपनी प्यास बुझाते हैं।

माता -म+आ+त+आ=

शब्द और अर्थ का संबंध:-

शब्द और अर्थ का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध। जिन शब्दों के अर्थ न हो उसे शब्द की श्रेणी में रखा ही नहीं जा सकता है, जैसे- नीपा ये शब्द भी चार वर्णों न्+ई+प्+आ के संयोग से बना है परंतु इसका कोई अर्थ नहीं अर्थात् इसे सार्थक शब्द नहीं कहा जाएगा।

शब्द के अर्थ का बोध

शब्द के अर्थ का बोध हमें दो प्रकार से होता है पहला आत्म-अनुभव और दूसरा पर-अनुभव से।

आत्म-अनुभव - जब हम स्वयं किसी चीज़ का अनुभव करते हैं जैसे - ‘चीनी मीठी होती है’ में मीठी शब्द के अर्थ का बोध हमें स्वयं चीनी चखने से हो जाता है। ठीक इसी प्रकार पानी, गर्मी, धूप इत्यादि

पर-अनुभव - अर्थ के बोध का अनेक क्षेत्र ऐसा भी होता है जहाँ हमारी पहुँच नहीं होती और हमें अर्थ बोध के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है जैसे हममें से बहुत से लोगों ने जहर नहीं देखा होगा लेकिन हमने दूसरों से यह सुन रखा है कि इसको खाने से मौत हो जाती है। ठीक इसी प्रकार - आत्मा, ईश्वर, मोक्ष इत्यादि शब्दों के अर्थ बोध के लिए हमें दूसरों के अनुभव की ज़रूरत पड़ती है।

पद

पद- शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होकर व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ जाते हैं तब वे पद कहलाते हैं और ये पद वाक्य के आंशिक भाव को प्रकट करते हैं।

यहाँ आपके लिए यह जान लेना आवश्यक है कि व्याकरणिक इकाइयाँ होती क्या है?

संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक, क्रिया,काल आदि व्याकरणिक बिन्दुओं को ही व्याकरणिक इकाइयाँ कहते हैं। माँ कब से खाना बना रहीं हैं|

माँ -एक वचन,स्त्रीलिंग,जातिवाचक

खाना -बहुवचन, जातिवाचक

कब से -काल

बना रहीं हैं- क्रिया ,वर्तमानकाल

उदाहरण के लिए एक शब्द है- 'राजा' अब हम इसे वाक्य में प्रयोग करेंगे।

राजा हरिश्चंद्र बहुत बड़े दानवीर थे।

यहाँ 'राजा' शब्द न रहकर पद में बदल चुका है क्योंकि एक तो यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह हरिश्चंद्र की विशेषता बता रहा है कि वे एक राजा थे।

दूसरा वाक्य

भारत के लगभग सभी राजाओं ने राजकुमारी संयुक्ता के स्वयंवर में भाग लिया।

यहाँ 'राजाओं' शब्द भी पद में बदल चुका है क्योंकि यहाँ भी यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह भारत के सभी राजाओं के बारे में बता रहा है।

इसे और स्पष्ट करने के लिए हमें यह जान लेना ज़रूरी है कि यह पद कौन-कौन से व्याकरणिक इकाइयों से अनुशासित हुआ है-

राजाओं - संज्ञा-जातिवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, भाग लिया क्रिया का कर्ता

इस प्रक्रिया को पद परिचय कहते हैं।

पदबंध

पद से बड़ी इकाई को पदबंध कहते हैं या एकाधिक पद को पदबंध कहते हैं।

पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं -

संज्ञा पदबंध
सर्वनाम पदबंध
विशेषण पदबंध
क्रिया पदबंध
क्रियाविशेषण पदबंध
इन पाँचों पदबंधों पर हम एक एक करके विचार करेंगे

संज्ञा पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में संज्ञा का काम करे उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।
प्रश्न - कौन देशभक्त हैं?
उत्तर - इज़राइल के प्रत्येक नागरिक

आज बाज़ार मे सस्ते दामों में आम मिल रहे थे।
प्रश्न - सस्ते दामों में क्या मिल रहा था?
उत्तर - आम

सर्वनाम पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में सर्वनाम का काम करे उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

काम करते-करते वह थक गया।
प्रश्न - काम करते-करते कौन थक गया?
उत्तर -वह

दूध में कुछ गिर गया है।
प्रश्न - दूध में क्या गिर गया है?
उत्तर - कुछ

विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में विशेषण काम करे उसे विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कैसे लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

प्रश्न - इस दुनिया में कैसे लोग बहुत कम हैं?

उत्तर - ईमानदार

मेहनत से जी चुराने वाले सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न - कैसे लोग सफल नहीं होते हैं?

उत्तर - मेहनत से जी चुराने वाले

क्रिया पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया काम करे उसे क्रिया पदबंध कहते हैं। इसमें किसी कार्य के होने का बोध होता है जैसे-

बहुत देर हो गई है।

बच्चे परीक्षा दे रहे हैं।

क्रिया विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया विशेषण काम करे उसे क्रिया विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कि इसमें क्रिया की विशेषता का बोध होता है इसमें क्रिया के साथ कितना, कहाँ, कैसे और कब आदि लगाकर प्रश्न बनाए जाते हैं, जैसे-

बच्चा बहुत दूर चलते-चलते थक गया।

प्रश्न - बच्चा कितना चलते-चलते थक गया?

उत्तर - बहुत दूर

दो लड़के खिड़की से बाहर देख रहे हैं।

प्रश्न - दो लड़के कहाँ देख रहे हैं?

उत्तर - खिड़की से बाहर

गाड़ी बहुत तेज़ चल रही है।

प्रश्न - गाड़ी कैसे चल रही है?

उत्तर - बहुत तेज़
राजू के बड़े भाई परसों दिल्ली चले गए।
प्रश्न - राजू के बड़े भाई कब दिल्ली चले गए?
उत्तर - राजू के बड़े भाई परसों
इसके अतिरिक्त रेखांकित पदबंधों के अंतिम शब्द के आधार पर भी हम पदबंध का निर्धारण कर सकते हैं, जैसे-
इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।
काम करते-करते वह थक गया।
इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।
बहुत देर हो गई है।
दो लड़के खिड़की से बाहर देख रहे हैं।

समास की पूरी जानकारी | समास के भेद परिभाषा और उदाहरण -Samas in hindi

इस लेख में आपको समास (हिंदी व्याकरण) से जुड़ी संपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी। जिसमे अर्थ, परिभाषा, भेद, प्रकार और उदाहरण शामिल हैं। इस विषय पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए इस लेख को अंत तक अवश्य पढ़ें।

समास का अर्थ **'संक्षिप्त'** या **'संक्षेप'** होता है। **समास** का तात्पर्य है 'संक्षिप्तीकरण'। दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। कम से कम दो शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना समास का लक्ष्य होता है।
जैसे -
'रसोई के लिए घर' इसे हम 'रसोईघर' भी कह सकते हैं।

समास का प्रयोग

- संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं में समास का बहुतायत में प्रयोग होता है।
- जर्मन आदि भाषाओं में भी इस का बहुत अधिक प्रयोग होता है।
- समासिक शब्द अथवा पद को अर्थ के अनुकूल विभाजित करना विग्रह कहलाता है।

सरल भाषा में पहचानने का तरीका =>

पूर्व प्रधान – अव्ययीभाव समास

उत्तर पद प्रधान – तत्पुरुष , कर्मधारय व द्विगु

दोनों पद प्रधान – द्वंद समास

दोनों पद प्रधान – बहुव्रीहि इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है

सामान्यतः समास छह प्रकार के माने गए हैं। १ अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द्विगु, ५ द्वन्द्व और ६ बहुब्रीहि.

१. अव्ययीभाव => पूर्वपद प्रधान होता है।

२. तत्पुरुष => उत्तरपदप्रधान होता है।

३. कर्मधारय => दोनों पद प्रधान।

४. द्विगु => पहला पद संख्यावाचक होता है।

५. द्वन्द्व => दोनों पद प्रधान होते है , विग्रह करने पर दोनों शब्द के बिच (-)हेफन लगता है।

६. बहुब्रीहि => किसी तीसरे शब्द की प्रतीति होती है।

समास की संपूर्ण जानकारी

सामासिक शब्द, समास विग्रह और **पूर्व पद - उत्तर पद** की जानकारी आपको नीचे दी जा रही है। उसके बाद आपको समास के भेद की विस्तार में जानकारी प्राप्त होगी।

सामासिक शब्द

समास के नियमों से निर्मित शब्द **सामासिक शब्द** कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहते हैं। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं। जैसे-राजपुत्र।

समास विग्रह (Samas vigrah) –

सामासिक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।

जैसे-

- राजपुत्र राजा का पुत्र -
- देशवासी देश के वासी -
- हिमालय हिम का आलय -

पूर्वपद और उत्तरपद

समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे-गंगाजल। इसमें गंगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।

संस्कृत में समासों का बहुत प्रयोग होता है। अन्य भारतीय भाषाओं में भी समास उपयोग होता है। समास के बारे में संस्कृत में एक सूक्ति प्रसिद्ध है:

वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।तत् पुरुष कर्म धारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः॥

समास के भेद -Samas ke bhed

सामान्यतः समास छह प्रकार के माने गए हैं। १ अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द्विगु, ५ द्वन्द्व and ६ बहुब्रीहि. अब हम बारीकी से समाज के प्रति एक भेद को समझेंगे और उसका गहराई से विश्लेषण करेंगे। आपको साथ ही साथ अनेकों उदाहरण भी देखने को मिलेंगे जिसके बाद आपको हर एक भेद अच्छे से समझ आएगा।

1. अवययीभाव समास (Avyayibhav Samas)

जिस सामासिक पद का **पूर्वपद (पहला पद प्रधान)** प्रधान हो , तथा समासिक पद अव्यय हो , उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास में समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय हो जाता है।

जैसे **प्रतिदिन , आमरण , यथासंभव** इत्यादि।

अन्य उदाहरण

प्रति + कूल = प्रतिकूल

आ + जन्म = आजन्म

प्रति + दिन = प्रतिदिन

यथा + संभव = यथासंभव

अनु + रूप = अनुरूप।

पेट + भर = भरपेट

आजन्म – जन्म से लेकर

यथास्थान – स्थान के अनुसार

आमरण – मृत्यु तक

अभूतपूर्व – जो पहले नहीं हुआ

निर्भय – बिना भय के

निर्विवाद – बिना विवाद के

निर्विकार – बिना विकार के

प्रतिपल – हर पल

अनुकूल – मन के अनुसार

अनुरूप – रूप के अनुसार

यथासमय – समय के अनुसार

यथाक्रम – क्रम के अनुसार

यथाशीघ्र – शीघ्रता से

अकारण – बिना कारण के

2. तत्पुरुष समास (Tatpurush samas)

तत्पुरुष समास का **उत्तरपद** अथवा **अंतिम पद प्रधान** होता है। ऐसे समास में परायः प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होते हैं। द्वितीय पद के विशेष्य होने के कारण समास में इसकी प्रधानता होती है।

ऐसे समास तीन प्रकार के हैं तत्पुरुष , कर्मधारय तथा द्विगु।

तत्पुरुष समास के छः भेद हैं -

- **कर्म तत्पुरुष**
- **करण तत्पुरुष**
- **संप्रदान तत्पुरुष**
- **अपादान तत्पुरुष**
- **संबंध तत्पुरुष**
- **अधिकरण तत्पुरुष**

तत्पुरुष समास में दोनों शब्दों के बीच का कारक चिन्ह लुप्त हो जाता है।

राजा का कुमार = राजकुमार

धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ

रचना को करने वाला = रचनाकार

कर्म तत्पुरुष

इसमें कर्म कारक की विभक्ति **'को'** का लोप हो जाता है।

सर्वभक्षी – सब का भक्षण करने वाला

यशप्राप्त – यश को प्राप्त

मनोहर – मन को हरने वाला

गिरिधर – गिरी को धारण करने वाला

कठफोड़वा - कांठ को फ़ोड़ने वाला

माखनचोर – माखन को चुराने वाला।

शत्रुघ्न – शत्रु को मारने वाला

गृहागत - गृह को आगत

मुंहतोड़ – मुंह को तोड़ने वाला

कुंभकार – कुंभ को बनाने वाला

करण तत्पुरुष

इसमें करण कारक की विभक्ति **'से'** , **'के'** , **'द्वारा'** का लोप हो जाता है। जैसे – रेखा की , रेखा से अंकित।

सूररचित – सूर द्वारा रचित

तुलसीकृत - तुलसी द्वारा रचित

शोकग्रस्त – शोक से ग्रस्त

पर्णकुटीर - पर्ण से बनी कुटीर

रोगातुर – रोग से आतुर

अकाल पीड़ित – अकाल से पीड़ित

कर्मवीर – कर्म से वीर

रक्तरंजित – रक्त से रंजीत

जलाभिषेक - जल से अभिषेक

करुणा पूर्ण – करुणा से पूर्ण

रोगग्रस्त – रोग से ग्रस्त

मदांध – मद से अंधा

गुणयुक्त – गुणों से युक्त

अंधकार युक्त – अंधकार से युक्त

भयाकुल - भय से आकुल

पददलित – पद से दलित

मनचाहा – मन से चाहा

संप्रदान तत्पुरुष

इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति **' के लिए '** लुप्त हो जाती है।

युद्धभूमि - युद्ध के लिए भूमि

रसोईघर – रसोई के लिए घर

सत्याग्रह – सत्य के लिए आग्रह

हथकड़ी – हाथ के लिए कड़ी

देशभक्ति - देश के लिए भक्ति

धर्मशाला – धर्म के लिए शाला

पुस्तकालय - पुस्तक के लिए आलय

देवालय – देव के लिए आलय

भिक्षाटन – भिक्षा के लिए ब्राह्मण

राहखर्च - राह के लिए खर्च

विद्यालय – विद्या के लिए आलय

विधानसभा – विधान के लिए सभा

स्नानघर – स्नान के लिए घर

डाकगाड़ी – डाक के लिए गाड़ी

परीक्षा भवन - परीक्षा के लिए भवन

प्रयोगशाला – प्रयोग के लिए शाला

अपादान तत्पुरुष

इसमें अपादान कारक की विभक्ति **'से'** लुप्त हो जाती है।

जन्मांध – जन्म से अंधा

कर्महीन - कर्म से हीन

वनरहित - वन से रहित

अन्नहीन - अन्न से हीन

जातिभ्रष्ट - जाति से भ्रष्ट

नेत्रहीन – नेत्र से हीन

देशनिकाला - देश से निकाला

जलहीन - जल से हीन

गुणहीन - गुण से हीन

धनहीन – धन से हीन

स्वादरहित - स्वाद से रहित

ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त

पापमुक्त – पाप से मुक्त

फलहीन – फल से हीन

भयभीत – भय से डरा हुआ

संबंध तत्पुरुष

इसमें संबंध कारक की विभक्ति 'का' , 'के' , 'की' लुप्त हो जाती है।

जलयान – जल का यान

छात्रावास – छात्रावास

चरित्रहीन – चरित्र से हीन

कार्यकर्ता – कार्य का करता

विद्याभ्यास – विद्या अभ्यास

सेनापति - सेना का पति

कन्यादान – कन्या का दान

गंगाजल – गंगा का जल

गोपाल   – गो का पालक

गृहस्वामी - गृह का स्वामी

राजकुमार - राजा का कुमार

पराधीन – पर के अधीन

आनंदाश्रम - आनंद का आश्रम

राजपूत्र – राजा का पुत्र

विद्यासागर   – विद्या का सागर

राजाज्ञा – राजा की आज्ञा

देशरक्षा – देश की रक्षा

शिवालय - शिव का आलय

अधिकरण तत्पुरुष

इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति ' में ' , ' पर ' लुप्त हो जाती है।

रणधीर – रण में धीर

क्षणभंगुर – क्षण में भंगुर

पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम

आपबीती – आप पर बीती

लोकप्रिय – लोक में प्रिय

कविश्रेष्ठ – कवियों में श्रेष्ठ

कृषिप्रधान - कृषि में प्रधान

शरणागत – शरण में आगत

कलाप्रवीण – कला में प्रवीण

युधिष्ठिर – युद्ध में स्थिर

कलाश्रेष्ठ – कला में श्रेष्ठ

आनंदमग्न – आनंद में मग्न

गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश

आत्मनिर्भर – आत्म पर निर्भर

शोकमग्न – शोक में मगन

धर्मवीर – धर्म में वीर

3. कर्मधारय समास (Karmdharay samas)

जिस तत्पुरुष समाज के समस्त पद समान रूप से प्रधान हो , तथा विशेष्य - विशेषण भाव को प्राप्त होते हैं। उनके लिंग , वचन भी समान हो वहां कर्मधारय समास होता है।

कर्मधारय समास चार प्रकार के होते हैं -

१ विशेषण पूर्वपद ,

२ विशेष्य पूर्वपद ,

३ विशेषणोभय पद तथा ,

४ विशेष्योभय पद।

आसानी से समझे तो जिस समस्त पद का **उत्तर पद प्रधान** हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान - उपमेय तथा विशेषण -विशेष्य संबंध हो कर्मधारय समास कहलाता है।
पहला व बाद का पद दोनों प्रधान हो और उपमान - उपमेय या विशेषण विशेष्य से संबंध हो

कर्मधारय समास के उदाहरण

Karmdharay samas ke udahran

अधमरा - आधा है जो मरा

महादेव - महान है जो देव

प्राणप्रिय – प्राणों से प्रिय

मृगनयनी – मृग के समान नयन

विद्यारत्न – विद्या ही रत्न है

चंद्रबदन – चंद्र के समान मुख

श्यामसुंदर – श्याम जो सुंदर है

क्रोधाग्नि – क्रोध रूपी अग्नि

नीलकंठ – नीला है जो कंठ

महापुरुष – महान है जो पुरुष

महाकाव्य – महान काव्य

दुर्जन – दुष्ट है जो जन

चरणकमल – चरण के समान कमल

नरसिंह – नर मे सिंह के समान

कनकलता – कनक की सी लता

नीलकमल – नीला कमल

महात्मा – महान है जो आत्मा

महावीर – महान है जो वीर

परमानंद - परम है जो आनंद

4. द्विगु समास (Dwigu samas)

जिस समस्त पद का **पहला पद (पूर्वपद) संख्यावाचक विशेषण** हो वह द्विगु समास कहलाता है। द्विगु समास दो प्रकार के होते हैं **१ समाहार द्विगु** तथा **२ उपपद प्रधान द्विगु समास।**

नवरात्रि – नवरात्रियों का समूह

सप्तऋषि - सात ऋषियों का समूह

पंचमढ़ी – पांच मणियों का समूह

त्रिनेत्र - तीन नेत्रों का समाहार

अष्टधातु – आठ धातुओं का समाहार

तिरंगा – तीन रंगों का समूह

सप्ताह - सात दिनों का समूह

त्रिकोण – तीनों कोणों का समाहार

पंचमेवा – पांच फलों का समाहार

दोपहर – दोपहर का समूह

सप्तसिंधु – सात सिंधुयों का समूह

चौराहा – चार राहों का समूह

त्रिलोक – तीनों लोकों का समाहार

त्रिभुवन – तीन भवनों का समाहार

नवग्रह - नौ ग्रहों का समाहार

तिमाही – 3 माह का समाहार

चतुर्वेद – चार वेदों का समाहार

5. द्वंद समास (Dvandva Samas)

द्वंद समास जिस समस्त पदों के दोनों पद प्रधान हो , तथा विग्रह करने पर 'और' , ' अथवा ' , 'या' , 'एवं' लगता हो वह द्वंद समास कहलाता है। इसके तीन भेद हैं - १ इत्येत्तर द्वंद , २ समाहार द्वंद , ३ वैकल्पिक द्वंद।

अन्न - जल = अन्न और जल

नदी - नाले = नदी और नाले

धन - दौलत = धन दौलत

मार-पीट = मारपीट

आग - पानी = आग और पानी

गुण - दोष = गुण और दोष

पाप - पुण्य = पाप या पुण्य

ऊंच - नीच = ऊंच या नीचे

आगे - पीछे = आगे और पीछे

देश - विदेश = देश और विदेश

सुख - दुख = सुख और दुख

पाप - पुण्य =पाप और पुण्य

अपना - पराया = अपना और पराया

नर - नारी = नर और नारी

राजा - प्रजा = राजा और प्रजा

छल - कपट = छल और कपट

ठंडा - गर्म = ठंडा या गर्म

राधा - कृष्ण =राधा और कृष्ण

6. बहुव्रीहि समास (Bahubrihi Samas)

जिस पद में कोई पद प्रधान नहीं होता दोनों पद मिलकर किसी **तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं** उसमें बहुव्रीहि होता है।
बहुव्रीहि समास में आए पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पदार्थ की प्रधानता हो तब उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जिस समस्त पद में कोई पद प्रधान नहीं होता , दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं , उसमें बहुव्रीहि समास होता है। जैसे -

नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव इस समास के पदों में कोई भी पद प्रधान नहीं है , बल्कि पूरा पद किसी अन्य पद का विशेषण होता है।
चतुरानन - चार है आनन जिसके अर्थात ब्रह्मा

चक्रपाणि – चक्र है पाणी में जिसके अर्थात विष्णु

चतुर्भुज - चार है भुजाएं जिसकीअर्थात विष्णु

पंकज – पंक में जो पैदा हुआ हो अर्थात कमल

वीणापाणि – वीणा है कर में जिसके अर्थात सरस्वती

लंबोदर – लंबा है उद जिसका अर्थात गणेश

गिरिधर – गिरी को धारण करता है जो अर्थात कृष्ण

पितांबर – पीत हैं अंबर जिसका अर्थात कृष्ण

निशाचर – निशा में विचरण करने वाला अर्थात राक्षस

मृत्युंजय - मृत्यु को जीतने वाला अर्थात शंकर

घनश्याम – घन के समान है जो अर्थात श्री कृष्ण

दशानन – दस है आनन जिसके अर्थात रावण

नीलांबर – नीला है जिसका अंबर अर्थात श्री कृष्णा

त्रिलोचन – तीन है लोचन जिसके अर्थात शिव

चंद्रमौली – चंद्र है मौली पर जिसके अर्थात शिव

विषधर – विष को धारण करने वाला अर्थात सर्प

प्रधानमंत्री – मंत्रियों ने जो प्रधान हो अर्थात प्रधानमंत्री

समास में अंतर विस्तार में समझें -

अब हम **एक जैसे दिखने वाले समास** में अंतर उदाहरण सहित विस्तार में समझेंगे।

कर्मधारय और बहुव्रीहि में अंतर

कर्मधारय में समस्त-पद का एक पद दूसरे का विशेषण होता है। इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है।

जैसे - नीलकंठ = नीला कंठ।

बहुव्रीहि में समस्त पाद के दोनों पादों में विशेषण-विशेष्य का संबंध नहीं होता अपितु वह समस्त पद ही किसी अन्य संज्ञादि का विशेषण होता है।

इसके साथ ही शब्दार्थ गौण होता है और कोई भिन्नार्थ ही प्रधान हो जाता है।

जैसे - नील+कंठ = नीला है कंठ जिसका शिव ।.
इन दोनों समासों में अंतर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए , कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है , और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है।

जैसे –

नीलगगन में - नील विशेषण है , तथा गगन विशेष्य है।
इसी तरह

चरणकमल में – चरण उपमेय है , कमल उपमान है।
अतः यह दोनों उदाहरण कर्मधारय समास के हैं।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है।

जैसे -

चक्रधर - चक्र को धारण करता है जो , अर्थात श्री कृष्ण।

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है , जबकि द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है। और दूसरा पर विशेष्य होता है। जैसे -

दशानन – दश आनन है जिसके अर्थात रावण। बहुव्रीहि समास

चतुर्भुज – चार भुजाओं का समूह द्विगु समास

दशानन – दश आननों का समूह द्विगु समास।

चतुर्भुज – चार है भुजाएं जिसकी अर्थात विष्णु , बहुव्रीहि समास

संधि और समास में अंतर

संधि वर्णों में होती है। इसमें विभक्ति या शब्द का लोप नहीं होता है।

जैसे - देव + आलय = देवालय।

समास दो पदों में होता है। यह होने पर विभक्ति या शब्दों का लोप भी हो जाता है।

जैसे - माता और पिता = माता-पिता।

द्विगु और कर्मधारय में अंतर

द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है , जो दूसरे पद की गिनती बताता है। जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्या कभी नहीं होता है। द्विगु का पहला पद विशेषण बनकर प्रयोग में आता है , जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है।

जैसे -

नवरत्न – नौ रत्नों का समूह द्विगु समास

पुरुषोत्तम – पुरुषों में जो उत्तम है कर्मधारय समास

रक्तोत्पल – रक्त से जो उत्पल कर्मधारय समास।

चतुर्वर्ण – चार वर्णों का समूह द्विगु समास

संधि और समास में अंतर

अर्थ की दृष्टि से यद्यपि दोनों शब्द समान है। अर्थात दोनों का अर्थ मेल ही है , तथपि दोनों में कुछ भिन्नता है जो निम्नलिखित है।

- संधि वर्णों का मेल है और समास शब्दों का मेल है।
- संधि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन भी होते हैं , जबकि समास में ऐसा नहीं होता समास में बहुत से पदों के बीच के कारक चिन्हों का अथवा समुच्चयबोधक का लोप हो जाता है।
- जैसे विद्या विद्यालय संधि = आलय +
- राजा का पुत्र राजपुत्र समास =